

था इसलिए जब मोहम्मद (सल्ल) ने उन्हें इस्लाम की तरफ बुलाया तो उन्होंने कहा आप हमें कहते हैं की अपने 360 मूर्तियों को छोड़ दे और एक खुदा की इबादत करे जिसे हम देख भी नहीं सकते ऐसे तो हमारा रोजी रोटी छीन जाएगी

हुजूर (सल्ल) का खानदान

नबी का खानदान बहुत लम्बा है पर हम आसानी के लिए अब्दमानाफ से शुरू करेंगे अब्दमानाफ एक कुरैशी था इसके दो बेटे थे पहले बेटे का नाम था हाशिम इबने अब्दमानाफ और दूसरा मुत्तलिब इबने अब्दमानाफ हाशिम एक वक्त पर कुरैश का खास सरदारों में आता था इन्ही के नाम पर हासमी कबीले का नाम रखा गया वो अपने समय में बहुत बड़े व्यापारी थे ये हुजूर (सल्ल) के परदादा थे वो व्यापारी करने के लिए बहुत दूर के देशों में जाया करते थे एक बार की बात है के वो व्यापारी के लिए मदीना गए हुए थे (इस्लाम से पहले मदीना को यसरिब कहा जाता था) अपने खरीद फरोखत के दौरान उनके नजर एक औरत पर पड़ी जो बहुत ही बेहतरीन अंदाज में लोगों से बातें कर रही थी और वो अकेले ही सब कामों को संभाल रही थी उन्होंने ऐसे बेहतरीन लबो लहजे वाली औरत को कभी नहीं देखा था वो उस औरत के बारे में और जानना चाहते थे तो उन्होंने लोगों से पूछा तो उन्हें पता चला के उस औरत नाम सलमा बिनत अम्र था वो उस समय मदीना की सबसे प्रभावी औरत थी वो इतनी काबिल औरत थी के उनके यहाँ लड़कों के रिश्ते आते थे और वो सारा व्यापारी खुद ही किया करती थी जब हाशिम ने सलमा के बारे में ये सब जाना तो वो उनसे शादी करने के बारे में सोचने लगे जब हाशिम ने उनसे शादी करने के बात रखी तो सलमा ने उनसे कहा मैं अपने जिंदगी को खुल कर जीना चाहती हूँ शादी के बाद भी मैं अपने काम काज यहीं मदीने में रह कर खुद सम्भालूंगी मैं मक्के में जाकर एक आम औरत की तरह नहीं रहूंगी अगर आपको ये सब शर्तें मंजूर हैं तो मैं आपसे शादी करूंगी हाशिम सब शर्तें मान गए और उनकी शादी हो गयी हाशिम जब भी मदीना आते तब वे दोनों साथ में रहते और ऐसा बहुत समय तक चलता रहा सलमा ने इस दौरान एक बच्चे को जन्म दिया हाशिम अपने इस बेटे को अपने साथ मक्का ले जाना चाहता था पर उसकी बीवी मक्के में जाकर नहीं रहना चाहती